ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ୟା

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା

देशिआ भाषा शिक्षा

DESIA PRIMER

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

ई–पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई–सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य–सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई–पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई–सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई–पाठशाला के माध्यम से ई–सामग्री प्राप्त करें।

1	2	3	4	5
प्ले स्टोर से ई–पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें	क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें	स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें	लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें	उपलब्ध ई–सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई–पाठशाला द्वारा ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें–
https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई–सामग्री प्राप्त करें।

1	2	3	4	5	6
अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें	अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी	पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें	क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें	कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें	क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई–सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई–सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें–
https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

श्री नरेंद्र मोदी

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକପା

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା

देशिआ भाषा शिक्षा

DESIYA PRIMER

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

ଜାତୀୟ ଶିକ୍ଷା ଅନୁସନ୍ଧାନ ଓ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ପରିଷଦ

National Council of Educational Research & Training

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ୟା

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା

देशिआ भाषा शिक्या

DESIYA PRIMER

କମିଟି :

Committee Constituted by NCERT :

Prof. Basanta Kumar Panda, Chairperson
Prof. Amarendra P Behera, Member
Dr. Rudrani Mohanty, Member
Dr. Kapila Khemundu, Member
Dr. Rajendra Kumar Padhi, Member
Dr. Gopabandhu Mohanty, Member
Dr. Subrat Kumar Prusty, Member
Dr. Mahendra Kumar Mishra, Member
Sri Dileswar Rana, Member
Dr. Paramananda Patel, Coopted Member
Dr. Govinda Chandra Penthoi, Coopted Member
Prof. Prakash Chandra Agrawal, Member-Convener

ପ୍ରସ୍ତୁତି :

Prepared by :

Dr. Mahendra Kumar Mishra, Advisor, MLE, LLF
Sri Sibo Sankar Patnaik, Instructor
Dr. Rajendra Padhi, Coordinator
Dr. Gopabandhu Mohanty, Member
Dr. Rudrani Mohanty, Member
Dr. Kapila Khemundu, Member
Sri Somanath Amanatya, ERP
Ms. Geetanjali Pujari, ERP
Sri Narayana Majhi, ERP
Sri Govinda Kumjharia, ERP
Sri Surendra Tanti, ERP

The material has been prepared in a workshop conducted by NCERT
in collaboration with Central University of Odisha, Koraput.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मंत्री
शिक्षा; कौशल विकास
और उद्यमशीलता
भारत सरकार
Minister
Education; Skill Development
& Entrepreneurship
Government of India

संदेश

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत 2047 के संकल्प के मार्ग का प्रमुख अवयव भारतीय भाषाएँ हैं, जिनसे ज्ञान-विज्ञान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुंच देश के समस्त बच्चों तक सुनिश्चित हो सकती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफ़ारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब छात्रों को उनकी मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसीलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है।

अतः हमने एन.सी.ई.आर.टी तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा/ओं तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)

स्वच्छ भारत

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

कौशल भारत, कुशल भारत

MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
MSDE - Room No. 516, 5th Floor, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110001, Phone : 91-11-23465810, Fax : 011-23465825
E-mail : minister.sm@gov.in, minister-msde@gov.in

ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହି ପଢ଼େଇବେ କିପରି ?

ଭାରତର ନୂତନ ଶିକ୍ଷାନୀତି-୨୦୨୦ ତଥା ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ-୨୦୦୩ ଅନୁସାରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ତିନିବର୍ଷରୁ ଆଠବର୍ଷ ଯାଏଁ ମାତୃଭାଷା/ଘରର ଭାଷା/ସ୍ଥାନୀୟ ଭାଷା ତଥା ଆଂଚଳିକ ଭାଷାରେ ଶିକ୍ଷାଦାନ ବ୍ୟବସ୍ଥା ରହିଛି। ଭାରତର ଆଦିବାସୀ ବହୁଳ ଅଂଚଳରେ ସ୍କୁଲର ଶିକ୍ଷାଦାନର ଭାଷାକୁ ପିଲାମାନେ ବୁଝି ପାରୁ ନଥିବା ହେତୁ, ଶ୍ରେଣୀରେ ଶିକ୍ଷାଦାନରେ ବାଧା ହୁଏ। ତେଣୁ କେନ୍ଦ୍ର ସରକାର ପିଲାଙ୍କୁ ବାଲବାଟିକାକୁ (୩-୫)ବର୍ଷ ଆଦ୍ୟସାକ୍ଷରତା (ଶ୍ରେଣୀ ୧-୨) ଯାଏଁ ବୁନିଆଦୀ ସାକ୍ଷରତାର ପ୍ରଚଳନ କରିଛନ୍ତି। ଏଥିପାଇଁ ପିଲାଙ୍କୁ ସ୍ଥାନୀୟ ଗୀତଗପ ଜରିଆରେ ପ୍ରଥମେ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରି ପିଲାଙ୍କ ମୌନତା ଭାଂଗି ସେମାନଙ୍କୁ ମୁଖର କରିବାକୁ ହେବ। ଏହା କାହାଣୀ ବହି, ଚିତ୍ର ଓ କଥୋପକଥନ ଜରିଆରେ କରାଯିବ। ଏଥି ସହିତ ପିଲାଙ୍କର ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ, ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ପଢ଼ିବା ଓ ଲେଖିବା ଅଭ୍ୟାସ ମଧ୍ୟ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ପୁସ୍ତକ ଅନୁସାରେ କରାଯିବ।

ଓଡ଼ିଶାର ୨୩ ପ୍ରତିଶତ ଆଦିବାସୀ। ଆଦ୍ୟଶୈଶବ କାଳରୁ ତୃତୀୟ ଶ୍ରେଣୀଯାଏ ଆଦିବାସୀ ପିଲାଙ୍କୁ ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ାଇଲେ ସେମାନଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ବିକାଶ ସହିତ ସୃଜନ ଓ କଳ୍ପନାଶକ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ। କୋରାପୁଟର କନ୍ଧ ଓ ଦେଶିଆ ପିଲାମାନେ ଶ୍ରେଣୀରେ ଓଡ଼ିଆରେ ଭଲଭାବରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରୁନାହାନ୍ତି। ତା'ଛଡ଼ା ଯେହେତୁ ଘରେ ଓଡ଼ିଆରେ କଥାବାର୍ତ୍ତା କରନ୍ତି ନାହିଁ ସେମାନେ ସ୍କୁଲରେ ମଧ୍ୟ ଓଡ଼ିଆ ବହିର ପାଠ ବୁଝିପାରନ୍ତି ନାହିଁ। ଏହାର ମୂଳ କାରଣ ପିଲାଙ୍କୁ ବୁନିଆଦୀ ସାକ୍ଷରତା ସହିତ ପରିଚିତ କରାଯାଇ ନାହିଁ। ବାସ୍ତବରେ ଶ୍ରେଣୀରେ କିପରି ପିଲା ମାତୃଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖି ତା ସହିତ ଓଡ଼ିଆରେ ପଢ଼ିଲେଖି ପାରିବେ, ତାହାର ଏକ ସାର୍ଥକ ପଦ୍ଧତି ରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ପାଠ୍ୟକ୍ରମ ରୂପରେଖ ୨୦୨୩ରେ ବିସ୍ତୃତ ଭାବେ ଦିଆଯାଇଛି। ପିଲା ପଢ଼ିଲେଖି ଶିଖିବା ପ୍ରଥମ କଥା। ଏଣୁ କୁୱି ଭାଷା ଶିକ୍ଷା ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ପୁସ୍ତକରେ ଉଭୟ ପିଲାଙ୍କ ମାତୃଭାଷା ଓ ସ୍କୁଲର ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାର ସମସ୍ତ ଧ୍ୱନି, ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତ୍ରାକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ସଂସ୍କୃତିରୁ ଶବ୍ଦ ସଂପଦ ସଂଯୋଗ କରି ପୁସ୍ତକ ରଚନା କରାଯାଇଛି।

ବହୁଭାଷିକ ଶିକ୍ଷାର ଲକ୍ଷ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଘରର ଭାଷାରୁ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଆରମ୍ଭ କରି ରାଜ୍ୟଭାଷାରେ ପଢ଼ିବା ଲେଖିବା ଶିଖାଇବା। ଏହି ଦୃଷ୍ଟିରୁ କୁୱି ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ପୁସ୍ତକ କୋରାପୁଟର ଶିକ୍ଷକ ଓ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କ ପାଇଁ ନିଶ୍ଚିତ ଭାବେ ଉପାଦେୟ। ବୁନିଆଦି ସାକ୍ଷରତାର ଚାରିଗୋଟି ସୋପାନ ଅଛି। ପ୍ରଥମଟି କାହାଣୀ, କଥା ଓ ଚିତ୍ରକୁ ନେଇ ପିଲାଙ୍କ ବୌଦ୍ଧିକ ଭାଷା ବିକାଶ କରିବା। ତାପରେ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ପିଲାଙ୍କୁ ବସ୍ତୁସଂଗେ ଶବ୍ଦର ସଂପର୍କ ଚିହ୍ନାଇବା। ଶବ୍ଦରୁ ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବା। ପ୍ରତ୍ୟେକଙ୍କ ଶବ୍ଦରେ ଥିବା ଅକ୍ଷରକୁ ପିଲା ଅଲଗା କରିବା ପ୍ରକ୍ରିୟାକୁ ପାଠ୍ୟଚର୍ଯ୍ୟାରେ ଡିକୋଡିଙ୍ଗ୍ (decoding) କୁହାଯାଇଛି। ଏହି ଡିକୋଡିଙ୍ଗ୍ ଧ୍ୱନି ଓ ବର୍ଣ୍ଣର ସଂପର୍କକୁ ବୁଝାଏ। ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହିଟିକୁ କିପରି ପଢ଼ାଇବେ ତାହାର ମୂଳକଥା ତଳେ ଦିଆଗଲା।

ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ: ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ବସ୍ତୁର ନାମ କହିବେ ଓ ଶିକ୍ଷକ ପଚାରିବେ ଚିତ୍ରର ନାମ କେଉଁ ଧ୍ୱନିରୁ ଆରମ୍ଭ ହେଉଛି। (ଯଥା- 'ଅରଲି' ଚିତ୍ର ଦେଖି ତାର ପ୍ରଥମ ଧ୍ୱନି 'ଅ' ବୋଲି ପିଲା ଚିହ୍ନିବେ।

ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ : ପିଲାଙ୍କୁ ପ୍ରଥମେ ବୁଝାଇବେ 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି କିମିତି ଦିଶୁଛି। ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ 'ଅ' ଅକ୍ଷର ଚିହ୍ନିବାକୁ କହିବେ। ୩-୪ଟି ଶବ୍ଦ ଭିତରୁ ପିଲାଏ 'ଅ' ଅକ୍ଷରର ଧ୍ୱନି ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ ଓ 'ଅ' ଅକ୍ଷରକୁ ଲେଖିବାର ଅଭ୍ୟାସ କରିବେ।

ପଢ଼ିବା : ପିଲାଏ ଚିତ୍ର ଦେଖି ନିଜ ଭାଷାରେ ଶବ୍ଦ କହିବେ। ସେହି ଶବ୍ଦରୁ ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ ଆଙ୍ଗୁଠି ଲଗାଇ 'ଅରଲି' ପଢ଼ିବେ। ଅନ୍ୟ ଶବ୍ଦ ପଢ଼ି ସେହି ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଯେଉଁଠି ଅଛି ପିଲାଏ ଚିହ୍ନିବେ ଓ କହିବେ। 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣଟି ଶବ୍ଦର ଆଦ୍ୟରେ/ ମଧ୍ୟରେ/ଓ ଶେଷରେ କିମିତି ରହିଛି ତାହା ଶିକ୍ଷକ ବୁଝାଇବେ।

ଶିକ୍ଷକ କଳାପଟାରେ ଭାଷା ବହିର 'ଅ' ପଢ଼ାଇଲାବେଳେ, 'ଅରଲି' ସହିତ ଅନ୍ୟ ୩-୪ଟି ଶବ୍ଦ ବି ଲେଖିବେ। ତାପରେ ପିଲାମାନଙ୍କୁ ଜଣ ଜଣ କରି ଡାକି ଶବ୍ଦ ପଢ଼ିବା ଓ ବର୍ଣ୍ଣ ଚିହ୍ନିବା କାମ କରିବେ। ଯେହେତୁ ସବୁ ଶବ୍ଦ ପିଲାର ପରିଚିତ ପୃଥିବୀରୁ ଆସିଛି ଓ ପିଲା ବହିରେ ସେହି ଚିତ୍ର ଦେଖି ଚିହ୍ନି ଓ କହି ସାରିଛନ୍ତି, ତାକୁ ପଢ଼ିବାରେ ପିଲାଏ ସହଜ ଅନୁଭବ କରିବେ। ଶବ୍ଦଟିଏ ଲେଖି ତାର ପ୍ରତ୍ୟେକ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ଅଲଗା ଅଲଗା ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ। ବର୍ଣ୍ଣ ଯୋଡ଼ି ପୂରା ଶବ୍ଦକୁ ପଢ଼ିବାକୁ କହିବେ। ଏଥିରେ ପିଲାର ବର୍ଣ୍ଣ ପରିଚୟ, ଶବ୍ଦ ପରିଚୟ ଓ ଧ୍ୱନି ପରିଚୟ ହେବ। ଶବ୍ଦଟି ଜଣେ ପିଲା ପଢ଼ିଲାପରେ ଅନ୍ୟସବୁ ପିଲା ବି ସାଂଗରେ ଶବ୍ଦ ଉଚ୍ଚାରଣ କରିବେ। ଏହା ମିଳିତ ପଠନ।

ଲିଖନ : ପ୍ରଥମେ ପିଲାଙ୍କୁ 'ଅରଲି' ଶବ୍ଦର 'ଅ' ଲେଖିବା ଶିଖାଇବେ। 'ଅ' ବାମରୁ ଡାହାଣକୁ କିମିତି କଲମ ଚଲାଇବେ ତାହା ଶିକ୍ଷକ କରିବେ। ଏହା ସହାୟକ ଲିଖନ। ତାପରେ ପିଲା ବହିରେ ଥିବା ଖାଲି ଜାଗାରେ ନିଜେ ଉପରେ ଥିବା 'ଅ' ବର୍ଣ୍ଣ ଦେଖି ନିଜେ 'ଅ' ଲେଖିବେ। ପିଲାଏ ଲେଖିଲା ବେଳେ ଓ ପଢ଼ିଲାବେଳେ ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ସହାୟତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆବଶ୍ୟକ।

ପ୍ରତ୍ୟେକ ପୃଷ୍ଠାରେ ପିଲାଙ୍କ ମୌଖିକ ଭାଷା ବିକାଶ ପାଇଁ ୨-୩ ଧାଡ଼ିର ଗୀତ/ବାକ୍ୟ ଦିଆଯାଇଛି। ତାକୁ ଗାଇ/ପଢ଼ି ପିଲାଙ୍କ ସଂଗେ ଆଲୋଚନା କରିବେ। ସ୍କୁଲ ଲାଇବ୍ରେରୀର ଶିଶୁ କାହାଣୀ ବହି ନେଇ ମଧ୍ୟ ପିଲାଙ୍କ ଭାଷାରେ କାହାଣୀ କହି ଆଲୋଚନା କରିବେ। ମନେ ରଖିବେ, ପ୍ରଥମ-ଦ୍ୱିତୀୟ ଶ୍ରେଣୀର ପିଲାଙ୍କ ସଂଗେ ମାତୃଭାଷାରେ କାହାଣୀ/ଗୀତ କହି କଥା ହେବା ଆବଶ୍ୟକ। ପୁସ୍ତକରେ ଯେତିକି ଶବ୍ଦ ଦିଆଯାଇଛି ତାହା ସାକ୍ଷରତାର ନମୁନା ମାତ୍ର। ପିଲାଏ ଶହ ଶହ ଶବ୍ଦ ଜାଣିଥାନ୍ତି। ସେମାନଙ୍କୁ ଗୋଟିଏ ବର୍ଣ୍ଣ ଥାଇ ଶବ୍ଦ ପଚାରିଲେ ସେମାନେ ଅନେକ ଶବ୍ଦ କହିପାରିବେ। (ଯିମିତିକି 'କ'ରେ ଆରମ୍ଭ ହେଉଥିବା କେତେକ ଶବ୍ଦ କୁହ।)

କୁଡ଼ୁଖ ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ସାକ୍ଷରତାର ସମାନ ନିୟମ ରହିଛି। କେବଳ ଭାଷା ଅଲଗା।

ପିଲାଙ୍କ ସୁବିଧା ପାଇଁ ପ୍ରଥମେ କୁଡ଼ୁଖ ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣମାଳାରୁ ଗୀତ/ଶବ୍ଦ/ଅକ୍ଷର ଦିଆଯାଇଛି। ଏହା ଶିଖାଇଲା ବେଳେ ପିଲାଏ ଓଡ଼ିଆ ଧ୍ୱନି ଓ ଲିପି ନିଜ ମାତୃଭାଷାରୁ ଶିଖିପାରିବେ। କୁଡ଼ୁଖ ଓ ଦେଶିଆରେ ଓଡ଼ିଆର ସବୁ ବର୍ଣ୍ଣ ନାହିଁ। ତେଣୁ ପରେ ପରେ ଅବଶିଷ୍ଟ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା ଓଡ଼ିଆରୁ ନିଆଯାଇଛି। ଏହିପରି ମାତୃଭାଷାରେ ଥିବା ବର୍ଣ୍ଣ ଓ ମାତୃବାଷାରେ ନଥିବା ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣକୁ ମିଶାଇ ସଂପୂର୍ଣ୍ଣ କୁଡ଼ୁଖ ଓ ଦେଶିଆ ଭାଷାଶିକ୍ଷା ବହି ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇଛି।

ବୁନିୟାଦୀ ସାକ୍ଷରତା ଉପରେ ରାଜ୍ୟରେ ସ୍କୁଲମାନଙ୍କୁ ଯୋଗାଇଥିବା ଶିକ୍ଷକ ସହାୟକ ପୁସ୍ତକରୁ ଆପଣମାନେ ବିଶେଷ ଭାବରେ ଜାଣିପାରିବେ।

ଦେଶିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଅ	ଆ	ଇ	ଉ	ଋ	ଏ
				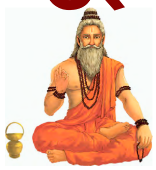	
ମାତ୍ରା→	ା	ି	ୁ	ୃ	େ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଗ	ଚ	ଜ	ଟ
ଡ	ତ	ଦ	ନ	ପ
			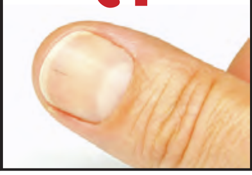	
ବ	ମ	ର	ସ	ଲ
ଂ	ଃ	ଁ		

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା (ଯାହା ଦେଶିଆରେ ନାହିଁ)

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଈ	ଊ	ଐ	ଓ	ଔ
ୀ	ୂ	ୈ	ୋ	ୌ

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

ଖ	ଘ	ଛ	ଝ
ଠ	ଢ	ଣ	ଥ
ଧ	ଫ	ଭ	ଯ
ୟ	ଳ	ୱ	ଶ
ଷ	ହ	କ୍ଷ	

ଅନ୍‌କା

ଅ

ଡାବ

ଲାଉ ଅନ୍‌କାଏ ପେଜ୍ ଡୁମ୍‌ଲି
ଅନ୍‌କା ହଇଲା କାନା,
ଅଦା ନୁନ୍ ମରିଚ୍ ବାଟି
ଅଲପ୍ ଅଲପ୍ ଆନା ।

ଅଲମ୍	ଅଲମ	ଅମ୍‌ରୁତ	ଅମୃତ ଭଣ୍ଡା	ଅକ୍‌ନି	ଉକୁଣୀ

ଅ ଅ ଅ ଅ ଅ

ଆମ୍

ଆ

ଆମ୍ବ

ଆଲୁ ଆମ୍ ପିଆଜ୍ ଧନିଆ ଚନା
ବଜାରେ ଯାଇ ଆନ୍‌ତେ ଆନା ।

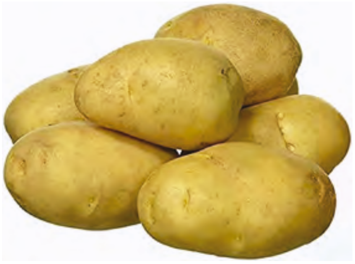

ଆଲୁ	ଆଲୁ	ପିଆଜ୍	ପିଆଜ	କଲିଆ	ବିଲୁଆ

ଆ ଆ ଆ ଆ ଆ

ଇଲା

ଇ

ଦାଆ

ଇନ୍ଦୁ ଇନ୍ଦର୍ ଦୁଇ ଭାଇ ଭଇନି
ଇଲା ଧରି ଭାର୍‌ଲାୟ୍ ଧାନ୍ କାଟାନି ।

ଇଟା	ଇଟା	ଡାଇବର	ଡ୍ରାଇଭର	ଗାଇ	ଗାଈ

ଇ ଇ ଇ ଇ ଇ

ଉଲି

ଉ

ପିଆଜ

ଉଟା ଉଟା ଡେରି ନାକରା ଆଉ
ଗଚେ ଡାକ୍‌ଲାନି କାଉ,
ତମର୍ ବାଡିବାଟେ ଆମର୍ ଲାଉ
ଉଲି ମିଶାଇ ଭାଜି ଖାଉ ।

ଉଡ଼ାଜାଜ୍	ଉଡ଼ାଜାହାଜ	କାଉ	କାଉ	ଲାଉ	ଲାଉ

ଉ ଉ ଉ ଉ ଉ

ଋଷି	ଋ
ଋଷି	ୃ

ଆସିଗଲା ଏବେ ବର୍ଷା ଋତୁ
କମ୍‌ନେ ଫୁଟ୍‌ଲା ଚତୁ,
ଜପି ଜପି ଋଷି ବସ୍‌ଲା ଆଚେ
ଘର୍‌କେ ନାହିଁ ଏତୁ ।

ମୃଗ	ହରିଣ	ଶୃଗାଳ	ବିଲୁଆ	କୃଷକ	ଚାଷି

ଋ ଋ ଋ ୃ ୃ

ଏପ୍ଲ୍

ଏ

ସେଓ

ଏପ୍ଲ କଦଳି ଖା,
ନିକ ହେଇ କରି ରା।

ଏକ	ଏକ	ଟାଏର୍	ଟାୟାର	ମାଏକା	ମାଇକ

ଏ ଏ ଏ ଏ ଏ

କପାଟ୍

କ

କବାଟ

କ-କରେ କଁ କ-କରେ କଁ
କପାଟ୍ କନେ ପିଠା ଆଚେ
କାକେ ନାଁ, କ।

କମ୍ଲା	କମଳା	ମାକଡ୍	ମାଙ୍କଡ	ନାକ୍	ନାକ

କ କ କ କ କ

ଗଚ୍

ଗ

ଗଛ

ଗଟି ଗଟି କରି ରପ୍ଲି ଗଢ଼
କନ୍ଟା ଆଗ କନ୍ଟା ପଚ ।

ଗଡ଼	ଗୋଡ଼	ମଂଗର	କୁମ୍ଭୀର	ନାଗ୍	ନାଗ

ଗ ଗ ଗ ଗ ଗ

ଚଙ୍‌ଡ଼ା

ଚ

ଚଙ୍ଗୁଡ଼ି

ା

ଚଙ୍‌ଡା ଗେନ୍‌ଲି ହାଟେ
ମରିଚ୍ ଗେନ୍‌ଲି ବାଟେ ।

ଚପଲ୍	ଚପଲ	ମାଚ୍	ମାଛ	ମରିଚ୍	ମରିଚ

ଆୟା	ମାଆ	ବାନା	ପତାକା	ବାବା	ବାପା

ଚ ଚ ଚ ା ା

ଜନି

ଜ

ଜହ୍ନି

ଜନିକେ ରପିଲି ରାଞ୍ଜୋ,
ପୁନି ଜନ୍‌କେ ଦେଖୁ ସଞ୍ଜୋ ।

ଜନ୍	ଜହ୍ନ	ପିଆଜ୍	ପିଆଜ	ବେଜ୍ରି	ଟମାଟ

ଜ	ଜ	ଜ	ଜ	ଜ

ଟକି

ଟ

ବାଳିକା

ି

ଚଇତ ପରବ୍ ଆସ୍‌ଲା,
ଟାମକ୍ ବାଜା ବାଜ୍‌ଲା,
ଟକି ରାସି ନାଚ୍‌ଲାୟ ।

ମୁଟ୍‌ଲା	ହାତୁଡ଼ି	ଟମାଟ୍	ଟମାଟ	ଟାମକ୍	ଟାମକ

ଚିନି	ଚିନି	ରାନି	ରାଣୀ	ଚେଲି	ଛେଲି

ଟ ଟ ଟ ି ି

ଡଂଗର୍

ଡ

ପାହାଡ

ଂ

ଡଙ୍‌ର ଦେବ୍‌ତା ଡଙ୍‌ରେ ଆଚେ
ଡଙର୍ ରାନି ଡାଲେ ଦର୍‌ଲା ଆଚେ୍ ।

ଡାବା	ଡବା	ଡରି	ଦୌଡି	କଡକି	କୋଦାଲ

ହଂସା	ହଂସ	ଟଂକା	ଟଂକା	ଡଂଗା	ଡଂଗା

ଡ ଡ ଡ ଂ ଂ

ତରବୁଜ୍	ତ
ତରଭୁଜ	ୁ
ତର୍‌ବୁଜ୍ ଗେନ୍‌ଲି ଆଟେ କାଟି ଖା ଗଟେ ଗଟେ ।	

ପତର୍	ପତ୍ର	ତାରା	ତାରା	ଦତ୍	ଦାନ୍ତ
କୁକ୍ଡା	କୁକୁଡା	ପୁଲ୍	ଫୁଲ	କୁକୁର୍	କୁକୁର

ତ ତ ତ ୁ ୁ

ଦତ୍

ଦ

ଦାନ୍ତ

ସର୍ଗି ଦାତୁନ୍ ଦତ୍କେ ଗସ୍ଲି
ସପା ଇଗଲା କେତେ,
ମଲି ଫୁଲ ପରା ଦିସ୍ସି ଆଚେ
ଜକ୍ ଜକି ଗଲା ସତେ ।

ଦର୍ପନ୍	ଦର୍ପଣ	କଦ୍ଲି	କଦଳୀ	ବଲଦ୍	ବଳଦ

ଦ ଦ ଦ ଦ ଦ

ନକ୍

ନ

ନଖ

କାଲିଆ ଜଂଗ୍ଲେ ବାସ୍ କରସି,
ନଖ୍ ମୁଣ୍ଡି ଲଗେ ଜୀବନ୍ ଯାଏସି ।

ନକି	ହାଣ୍ଡି	ପନ୍ସ	ପଣସ	କାନ୍	କାନ

ନ ନ ନ ନ ନ

ପତର୍ | ପ

ପତ୍ର | େ

ପତର୍ ଉପ୍‌ରେ ପତର୍
ଉଡ୍‌ତେ ରେସି ପର୍ ପର୍
ପତର୍ ଥାନେ ପାନି ପଡ୍‌ଲେ
ବଇ ଯାଇସି ଝର ଝର ।

ପନସ୍	ପଣସ	ଚପଲ୍	ଚପଲ	ସାପ୍	ସାପ

ତେତ୍ଲି	ତେନ୍ତୁଳି	ବେଂଡି	ଭେଣ୍ଡି	ଟେଙ୍ଗିଆ	ଟାଙ୍ଗିଆ

ପ ପ ପ େ େ

ବଗ୍

ବ

ବଗ

ବଗ୍ ଆଇଲା ଉଡି ଉଡି,
ମାଛ୍ ଖାଇଲା ବୁଡି ବୁଡି ।

ବସ୍	ବସ	ବଲଦ୍	ବଲଦ	ବରଗଚ୍	ବରଗଛ

ବ ବ ବ ବ ବ

ମଜୁର୍

ମ

ମୟୂର

ମଜୁରୁ ମଜୁରୁ ଡେନା ମଜୁରୁ,
ମଜୁରୁ ମଜୁରୁ ପଁକି ମଜୁରୁ ।

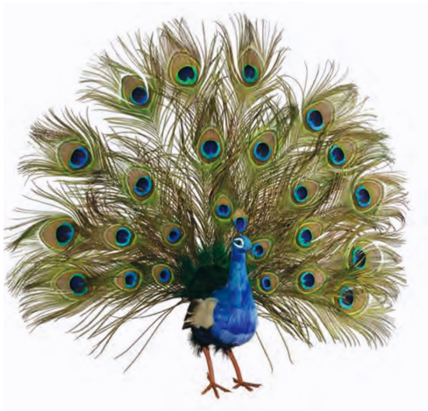

ମରିଚ୍	ଲଙ୍କା	ଚାମ୍‌ଚା	ଚାମଚ	ଚିମ୍‌ଟା	ସଣ୍ଡୁଆସି

ମ ମ ମ ମ ମ

ରଥ୍

ରଥ

ର

ର.. ର.. ରେ ରତ୍ନି ନନୀ
କାନ୍ଦ୍ ନାହିଁ କାନ୍ଦ୍ ନାହିଁ
କୋରାପୁଟ୍ ତକେ ବୁଲାୟ୍ ନେବି
ରଥ୍ ଯାତ୍ରା ଦେଖ୍ବା ପାଇଁ।

ରଟି	ରୁଟି	କରତ୍	କରତ	ମନ୍ଦିର୍	ମନ୍ଦିର

ର ର ର ର ର

ସଲା

ସ

ଶସ୍ୟ ମାପକ

ସତର୍ ସତର୍ ଦୁଇ୍ ସତର୍

ସଲାୟ୍ ନାପି ଆନା ଦୁଇ ଥର୍ ।

ସାଇକଲ୍	ସାଇକଲ	ସାବୁ	ସାବୁନ	ଗିଲାସ୍	ଗ୍ଲାସ

ସ ସ ସ ସ ସ

ଲସୁନ୍

ଲ

ରସୁଣ

ଲସ୍ ଲସି ଗଲା ଲସୁନ୍ ତାଷ୍
ବଡେ ନିକ ତାର୍ ବାସ୍ ।

ଲବଙ୍ଗ୍	ଲବଙ୍ଗ	କଲସ୍	କଲସ	ବଇଲ୍	ବଳଦ

ଲ ଲ ଲ ଲ ଲ

ଈଶ୍ୱର ଈ

ଈଶ୍ୱର	ୀ

ଈଶ୍ୱର ଲଗେ କର୍‌ଲେ ପାର୍‌ତନା,
ସବୁ ଦୁଖ୍ ଏସି ଉନା ।

ଈଷ	ଲଙ୍ଗଳ	ଗାଈ	ଗାଈ	ନଈ	ନଈ

ଦୀପ୍	ଦୀପ	ତୀର୍	ତୀର	ନାରୀ	ନାରୀ

ଈ ଈ ଈ ୀ ୀ

ଊଲ୍ ଊ

ଊଲ ୂ

ଊଲେ ବନାୟ୍ଲୁ ଊଲର୍ ସାଲ୍,
ଶିତକେ କେଡେକ ଭଲ୍ ।

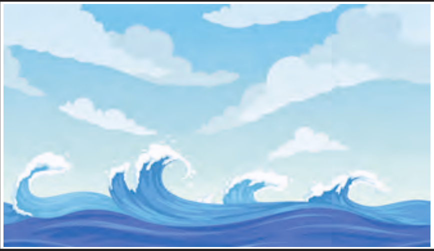

ଊରୁ	ଜଂଘ	ଊର୍ଦ୍ଧ୍ୱ	ଉପର	ଊର୍ମି	ତରଙ୍ଗ

କୂଅଁ	କୂପ	ମୂଷା	ମୂଷା	ମୟୂର୍	ମୟୂର

ଊ ଊ ଊ ୂ ୂ

ଐରାବତ ଐ

ଐରାବତ ୈ

ବଜାରେ ବଜା
ଐରାବତେ ଆଏଲା ଇନ୍ଦ୍ରରାଜା ।

ଐଶ	ଇଶ୍ୱର

ତୈଲ	ତେଲ	ସୈନିକ	ସୈନ୍ୟ	ଶୈଳ	ପର୍ବତ

ଐ ଐ ଐ ୈ ୈ

ଓଟ

ଓ

ଓଟ

ୋ

ଓଟ୍ ଗଲେ ଚାଲି ଚାଲି
ଓଡ୍‌ନା ଓଡି ଓଟେ ବସ୍‌ଲେ,
ଆଖିନେ ନାପଡେ ବାଲି ।

ଓଟ୍	ଓଠ	ଓକିଲ୍	ଓକିଲ	ଓଉ	ଓଉ

ଟୋପି	ଟୋପି	ଢୋଲ	ଢୋଲ	ଧୋତି	ଧୋତି

ଓ ଓ ଓ ୋ ୋ

ଔଷଧ ଔ

ଔଷଧ ୌ

ଜର୍ ମୁଣ୍ଡ୍‌ଏଲେ ଔଷଧ୍ ଖାଇବାର୍
ରୋଗ୍ ବେମାର୍‌କେ ଦୂର୍ କର୍‌ବାର୍ ।

ଔରତ୍	ନାରୀ	ଔଷଧ ଦୁକାନ୍	ଔଷଧାଳୟ	ଔଜଲ୍ୟ	ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ

ନୌକା	ଡଙ୍ଗା	ଲୌହ	ଲୁହା	ସୌଧ	କୋଠାଘର

ଔ ଔ ଔ ୌ ୌ

ଖଟ

ଖ

ଖଟ-କାଟେଲି

ଖଟ୍ ବନାୟ୍‌ଲା ଖଗ୍‌ପତି,
ଖଟେ ଶଇଲାନି ହେଲେ ରାତି ।

ଜଙ୍ଗଲ	ଖମନ୍	ଅରଖ	ଅରଖ୍	ଠେକୁଆ	ଖାଡା

ଖ ଖ ଖ ଖ ଖ

ଘର

ଘ

ଈଲୁ

ଘର୍ ତ ଘର୍ ଝିକର୍ ଘର,
ଜୟ୍ କେ ନାହିଁ ତାକେ ଡର୍ ।

ଘଡି	ଘଡି	ଘିଅ	ଘିଅ	ଘୁଷୁରୀ	ଘୁଷୁରୀ

ଘ ଘ ଘ ଘ ଘ

ଛାତା

ଛ

ଛତା

ଛାତା ଛାତଡି ହାତେ ଧରି
ଡକ୍‌ରା ବାର୍‌ଲା ବୁଡି କରି ।

ଛାତି	ଛତୁ	ଛାଲ୍	ଛାଲ	ଛଅ	ଛଅ

ଛ ଛ ଛ ଛ ଛ

ଝର୍‌ନା

ଝ

ଝରଣା

ଝର ଝର କରି ମାର୍‌ଲା ପାନି,
ନଦୀ ଝର୍‌ନା ସବୁ ପୁରିଗଲାନି ।

ଝର୍‌ଖା	ଝରକା	ଝୁଲ୍‌ନା	ଝୁଲଣା	ଝାଡୁ	ଝାଡୁ

ଝ ଝ ଝ ଝ ଝ

ଠେକୁଆ

ଠ

ଠେକୁଆ

ଖମନ୍ ଭିତ୍ରେ ଠେକୁଆ ପିଲା,
ଖଜି ଖଜି ଘାସ୍ ଖାଇତେ ରେଲା ।

ଠେଙ୍ଗ୍	ଠେଙ୍ଗା	କାଠ	କାଠ	ଠୁଗଂା	ଠୁଗଂା

ଠ ଠ ଠ ଠ ଠ

ଢାମଣା

ଢ

ଢମଣା

ଢଲ୍କି ଗଲା ଢୋଲ ବାଜା,
ଢେପ୍ ତଲେ ଢାମଣା ରାଜା ।

ଢଲ୍	ଢୋଲ	ଢାପୁ	ଢାବ	ଢାପନ୍	ଢାମ୍ପଣ

ଢ ଢ ଢ ଢ ଢ

ହରିଣ୍

ଣ

ହରିଣ

ଏକ୍ ଦୁଇ ତିନ୍,
ଖମନ୍ ଭିତ୍‌ରେ ଆଚେ ହରିଣ୍ ।

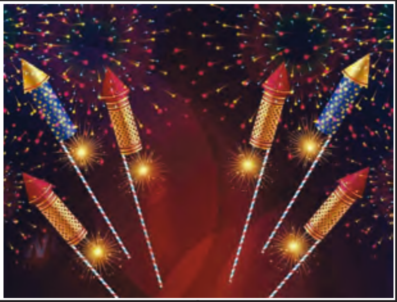

ଲୁଣ୍	ଲୁଣ	ବାଣ୍	ବାଣ	ବାଇଗଣ	ବାଇଗଣ

ଣ ଣ ଣ ଣ ଣ

ଥାଳି

ଥ

ଥାଳି

ଥାଳି ଥାନେ ଖାଇବୁ ଭାତ୍,
ଭାତ୍‌କେ ନାମାର୍‌ବାର୍ ଲାତ୍ ।

ଥଳି	ମୁଣି	ଥମନା	ମୁହଁ	ରଥ୍	ରଥ

ଥ ଥ ଥ ଥ ଥ

ଧୂପ୍‌କାଟି

ଧୂପକାଠି

ଧ

ନଡିଆ ଆରି ଧୂପ୍‌କାଟି,
ମାପ୍ରୁ ଘରେ ନେ ବେଟି ବେଟି ।

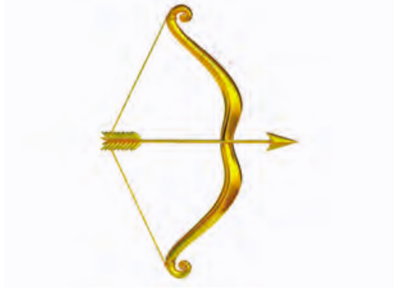

ଧନୁ	ଧନୁ	ଧାନ୍	ଧାନ	ଧୋତି	ଧୋତି

ଧ ଧ ଧ ଧ ଧ

ଫିର୍‌ଫିରି

ପ୍ରଜାପତି

ଫ

ଫିରଫିରି ବସେ ଏଫୁଲେ ସେଫୁଲେ,
ଫୁଲ୍ ଫୁଟି ଗଲା ବେଳେ ।

ଫଲ୍	ଫଳ	ଫୁଲ୍	ଫୁଲ	ଫଟ୍‌କା	ବେଲୁନ୍

ଫ ଫ ଫ ଫ ଫ

ଭାଲୁ

ଭ

ଭାଲୁ

ଭାତ୍ ସଙ୍ଗେ ଆଲୁ
ଡଙ୍ଗ୍‌ରେ ରେଲା ଭାଲୁ ।

ଭାରତ୍	ଭାରତ	ଭାକୁର୍	ଭାକୁର	ଭଁଅରା	ଭଅଁର

ଭ ଭ ଭ ଭ ଭ

ଯାତ୍‌ରା

ଯ

ଯାତ୍ରା

ଆଷାଢ଼୍ ମାସେ ରଥ ଯାତ୍‌ରା,
ଦେଖ୍‌ବାକେ ଯୁ ଯପ୍‌କେ ନିକ୍‌ରା ।

ଯଜ୍ଞ	ଯଜ୍ଞ	ଯାତାଦୌଡ଼ି	ପଘା	ଯତା	ଘୁରୁଣା

ଯ ଯ ଯ ଯ ଯ

ମୂଳା

ଳ

ମୂଳା

ମୂଳା ଫଳେ ମୂଳେ,
ଆତ ଫଳେ ଡାଳେ ।

ଫଳ୍	ଫଳ	ଜଳ୍	ଜଳ	କଳସ୍	କଳସ

ଳ ଳ ଳ ଳ ଳ

ତାୱା

ୱ

ତାୱା

ତାୱାଏ ବନାଉ ପିଟା
ଲାୱା ମାଉସ ବଡ଼େ ମିଠା।

ଲାୱା	ଗୁଣ୍ଡୁରି	କାୱା	କାଉ	ମାୱା	ମିଠା

ୱ ୱ ୱ ୱ ୱ

ଶର୍

ଶ

ତୀର

ଧନୁଶର୍ ବନାୟ୍‌ଲି ବାଉଁଶେ,
ବିନ୍ଧ୍‌ଲେ ଜାଏସି ଆକାଶେ ।

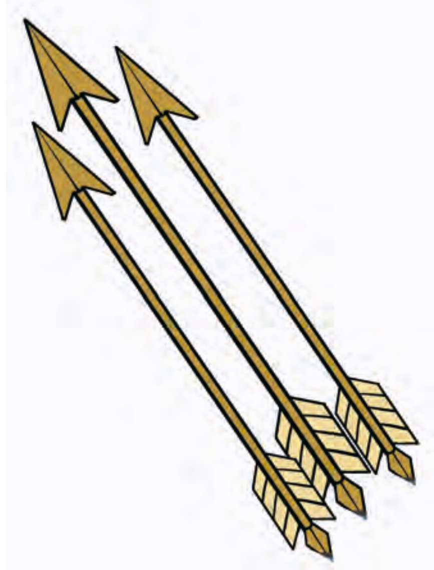

ଶାଗ୍	ଶାଗ	ବାଉଁଶ୍	ବାଉଁଶ	କଶ୍‌ଲା	ଢାଳ

ଶ ଶ ଶ ଶ ଶ

ଷଣ୍ଢ୍

ଷ

ଷଣ୍ଢ

ଷଣ୍ଢ୍ ଗଲା ପାନି ଖାଏକେ ଗାଡ଼େ,
ଓଷ କଜେ ଗଲା ଗୁଣ୍ଢ୍‌ରି ଚେଡେ।

ଔଷଧ୍	ଔଷଧ	ଈଷ୍	ଲଙ୍ଗଳ	ଚଷ୍‌ମା	ଚଷମା

ଷ ଷ ଷ ଷ ଷ

ହାତ୍

ହ

ହାତ

ହଲ୍ କରିଗଲା ହଲିଆ ଭାଇ,
ହାତେ ମାତର୍ ତାକେ ସମିଆ ନାହିଁ ।

ହଲ୍	ହଲ	ହାତୀ	ହାତୀ	ହାର୍	ହାର୍

ହ ହ ହ ହ ହ

ରକ୍ଷକ୍

କ୍ଷ

ରକ୍ଷକ

ରକ୍ଷକ୍ ଦେସ୍କେ ରକ୍ଷା କରୁଆୟ ।

କ୍ଷୀର	କ୍ଷୀର	ରାକ୍ଷୀ	ରାକ୍ଷୀ	ଭିକ୍ଷୁକ	ଭିକାରି

କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ କ୍ଷ

ଗୟଲ୍

ଗୟଲ

ୟ

ଗୟଲ୍ ରେସି ଜଂଗ୍‌ଲେ,
ମୟ୍‌ସି ରେସି କଟାସାଲେ ।

ମୟୂର୍	ମୟୂର	ପୟର୍	ପାଦ	ମୟ୍‌ସି	ମଇଁଷି

ୟ ୟ ୟ ୟ ୟ

ଓଡ଼ିଆ ବର୍ଣ୍ଣମାଳା

ସ୍ୱର ବର୍ଣ୍ଣ

ଅ	ଆ	ଇ	ଈ	ଉ	ଊ	
ଋ	ଏ	ଐ	ଓ	ଔ		

ବ୍ୟଞ୍ଜନ ବର୍ଣ୍ଣ

କ	ଖ	ଗ	ଘ	ଙ		
ଚ	ଛ	ଜ	ଝ	ଞ		
ଟ	ଠ	ଡ	ଢ	ଣ		
ତ	ଥ	ଦ	ଧ	ନ		
ପ	ଫ	ବ	ଭ	ମ		
ଯ	ର	ଲ	ୱ	ଶ	ଷ	ସ
ହ	କ୍ଷ	ୟ	ଳ	ଂ	ଃ	ଁ

ଅତିରିକ୍ତ ବର୍ଣ୍ଣ

ଡ଼	ଢ଼					

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ୟା | ଦେଶିଆ ଭାଷା ଶିକ୍ଷା | देशिआ भाषा शिक्षा | DESIA PRIMER

National Council of Educational Research & Training
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
e-mail: dceta.ncert@nic.in